विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०३/०९/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-सप्तम:पाठनाम सौहार्द प्रकृते: शोभा

नाट्यांश:-

सर्वे पक्षिण:- (उच्चै:) आम् आम् – कश्चित् खग: एव वनराज: भविष्यति इति।

(परं कश्चिदपि खग: आत्मानम् विना नान्यं कमपि अस्मै पदाय योग्यं चिन्तयति,

तर्हि कथं निर्णयं भवेत् ? तदा तै: सर्वै: गहननाद्रायां निश्चिन्तं स्वपन्तम् उलूकं

वीक्ष्य विचारितं यदेष: आत्मश्लाघाहीन: पदनिर्लिप्त:उलूको एवास्माकं। राजा

भविष्यति परस्परमादिशन्ति च तदानीयन्तां नृपाभिषेकसम्बन्धिन:सम्भारा: इति।)

सर्वेपक्षिण: सज्जायै गन्तुमिच्छन्ति तर्हि अनायास एव –

शब्दार्था:-

गहननिद्रायां -गहरी निन्द में

वीक्ष्य- देखकर

पदनिर्लिप्त: -पद के लालच से रहित

सज्जायै – तैयारी के लिए

अर्थ-

सभी पक्षी-(जोर से) -कोई पक्षी ही जंगल का राजा होगा ।

(परन्तु कोई भी पक्षी अपने अलावा दूसरे किसी को भी इस

पद के लिए योग्य नहीं सोचता है तो कैसै निर्णय हो । तब उन

सभी ने गहरी नींद में निश्चिंत सोते हुए उल्लू को देखकर सोचा

कि यह आत्मप्रशंसा से रहित , पद की लालच मुक्त उल्लू ही

हमारा राजा होगा ।और आपस में आदेश करते हैं,तो राजा के

अभिषेक के लिए सामान लाए जाएं।)

सभी पक्षी तैयारी के लिए जाना चाहते हैं ,तभी अचानक ही.....